दो शब्द

'ज्ञानवानेन सुखवान् ज्ञानवानेव जीवति।
ज्ञानवानेव बलवान् तस्मात् ज्ञानमयो भव।।'

ज्ञानविविधा का यह दूसरा अंक आपके समक्ष है | इस अंक हेतु बहुत सारा आलेख और विभिन्न विधाओं की रचनाएँ प्राप्त हुई| किन्तु,उनमें से कई वर्तमान अंक में प्रकाशित नहीं हो पाई है| शोध-पत्र पर्यवेक्षक मंडल/परामर्श-मंडल से अनुमोदित/स्वीकृत रचनाओं को वर्तमान अंक में प्रकाशित किया जा रहा है|शेष रचनाएँ अगले अंक में प्रकाशित होंगी|

हमारी कोशिश है कि आप विद्वत जनों, शोधार्थियों और साहित्य-रसिकों, सभी के ज्ञान और आनंद की प्रतिपूर्ति इस पत्रिका के माध्यम से हो पाए| सामान्यतः शोध-प्रकाशन से सम्बंधित पत्रिकाओं (JOURNAL'S) में सिर्फ शोधालेखों के प्रकाशन होने के कारण थोड़ी शुष्कता का आभास होता है| इसलिए हमने इसे दृष्टिगत रखते हुए इसमें साहित्य की अन्य विधाओं की रचना भी शोधालेख के साथ प्रकाशित करने का प्रयोग /नवाचार करने की कोशिश की है, ताकि यह शोधार्थियों के साथ ही साहित्य रसिकों के आनंद की प्राप्ति का भी माध्यम बन सके| इसमें हम कितना सफल हुए हैं ये आपके प्रत्युत्तर के पश्चात तय होगा|

और अंत में, सिर्फ इतना ही कि इस पत्रिका के प्रकाशन में जिनका भी प्रत्यक्ष या परोक्ष योगदान रहा है, उन सभी विद्वतजनों को धन्यवाद,साधुवाद| इस पत्रिका में जो भी अच्छा है,उसका श्रेय आप सभी गुरुजनों, सुधी पाठकों और साहित्यिकों का है और जो कुछ भी त्रुटि रह गई है उसकी जिम्मेदारी मेरे ऊपर है| अस्तु| इति शुभम|

डॉ. दिवाकर चौधरी
प्रधान संपादक